Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

माध्यमिक स्तर पर हिन्दी विषय के विद्यार्थियों में भूमिका निर्वाह प्रतिमान एवम् आगमन चिन्तन शिक्षण प्रतिमान के द्वारा शिक्षण से उनके शैक्षिक उपलब्धि, पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

विनीत सिंह
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, हण्डिया पी0जी0 कॉलेज, हण्डिया,
सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

डॉ0 प्रशान्त शुक्ला
असिस्टेंट प्रोफेसर शिक्षा संकाय,हण्डिया पी0जी0 कॉलेज, हण्डिया, प्रयागराज
सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info
Volume 6, Issue 6
Page Number : 182-192

Publication Issue :
November-December-2023

Article History
Accepted : 10 Nov 2023
Published : 30 Nov 2023

सारांश– बालक का सर्वांगीण विकास करने के लिए बालक की योग्यता, रूचि, मनोवृत्तियां आदि को आधार बनाया जाता है। बाल्यकाल में छात्र छात्राओं पर सर्वाधिक प्रभाव हिन्दी भाषा का पड़ता है। अतः हिन्दी भाषा में शिक्षण विधियों का अध्ययन आवश्यक है। जैस हिन्दी भाषा नदी के जल के समान सदा चलती एवं बहती रहती है। जिस प्रकार से नदी धरातल के अनुसार अपने स्वरूप को ग्रहण करती है, ठीक उसी प्रकार से हिन्दी भाषा भी देश, काल एवं सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप अपने स्वरूप का विकास करती है और हिन्दी भाषा के अपने आन्तरिक गुण या प्रकृति में परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन के रूप में प्रतिबिम्बित होते हैं। शिक्षा तकनीक एक ऐसी प्रविधि का विज्ञान है जिसके द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों का प्रभावी ढ़ग से प्राप्त किया जा सकता हैं दूसरे क्षेत्र केवल उद्देश्यो को व्यवहारिक रूप में परिभाषित करने में सहायता करते हैं। कक्षा–कक्ष में शिक्षण और अधिगम दोनों साथ–साथ चलते रहते है। शिक्षण प्रक्रिया का परिणाम ही अधिगम होता है।

संकेत शब्द – माध्यमिक स्तर, भूमिका निर्वाह प्रतिमान, आगमन चिंतन प्रतिमान, शैक्षिक उपलब्धि ।

प्रस्तावना– मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज का गठन मनुष्यों के पारस्परिक सहयोग से हुआ है। समाज में रहकर मनुष्य अपने विचारों का आदान प्रदान भाषा के माध्यम से ही करता है। अपने भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए उसे भाषा का ही सहारा लेना पड़ता है। जब भाषा का पर्याप्त विकास

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

नहीं हुआ तो मानव अपने विचारों का संप्रेषण ध्वनि संकेतों और सार्थक ध्वनियों के माध्यम से ही करता था। मनुष्य बोलते समय अपने चेहरे की आकृति हाथ और अंगुलियों की हरकत आदि के द्वारा अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता था। किसी भी व्यक्ति का बात करते समय चेहरे को किसी ओर झुकाना, गाल पर हाथ रखना, नाक को नीचे से छूना, सिर पर हाथ मारना आदि भाव भंगिमाएं भाषाई दृष्टि से सार्थक होती है।

भाषा ही वह कड़ी है, जो एक माध्यम के रूप में एक समाज से दूसरें से तीसरे से विश्व समुदाय को जोड़ने का कार्य करती है। वर्तमान में भारत में 80 प्रतिशत से अधिक भारतीय हिन्दी भाषा को समझने, बोलने, लिखने के कार्य में लाते है। भारत ही नही अपितु विश्व के अन्य देशों, मारीशस, रूस, जर्मनी, फ्रान्स, इटली, पोलैण्ड, हालैण्ड, चेकोस्लाविया, युगोस्लाविया, हंगरी, जापान, दक्षिण कोरिया, श्रीलंका, नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश के साथ–साथ अन्य बहुत से देशों में हिन्दी भाषा उत्थान हेतु अध्ययन–अध्यापन का कार्य प्रगति पर है। हिन्दी भारत की मातृभाषा के साथ–साथ राष्ट्रभाषा के गौरव से गौरवान्वित तो है ही विश्व की भाषाओं में भी प्रमुखता से अपना स्थन सुरक्षित कराने की ओर अग्रसर है। स्वतंत्रता के बाद मुदालियर शिक्षा आयोग या माध्यमिक शिक्षा आयोग की स्थापना की गई और हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में प्रमुख सुझाव दिये– शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा, पूर्व माध्यमिक स्तर पर कम से कम दो भाषाओं की शिक्षा दी जाये। मातृभाषा से शिक्षा आरम्भ की जाये और पूर्व माध्यमिक स्तर से अंग्रेजी भाषा का शिक्षण किया जायेगा।

माध्यमिक स्तर कक्षा 9 से 12 पर दो भाषाओं की शिक्षा दी जाये जिनमें एक मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा हो मुदालियर आयोग की संस्तुति के अनुसार माध्यमिक स्तर पर दो ही भाषाएं अनिवार्य रखा गया मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा तथा निम्नांकित में से कोई एक भाषा हिन्दी, अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के लिए प्रारम्भिक अंग्रेजी जिन्होंने मीडिल कक्षाओं में अंग्रेजी नही उच्च अंग्रेजी जिन्होने पहले अंग्रेजी पढ़ी है हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषा की शिक्षा।

पं0 जवाहर लाल नेहरू के अनुसार– "हिन्दी का ज्ञान राष्ट्रीयता को प्रोत्साहन देता है और हिन्दी अन्य भाषाओं की अपेक्षा सबसे अधिक राष्ट्र–भाषा बनाने की योग्यता रखती है।

आज की विद्यालयीय शिक्षा के समक्ष बहुत चुनौतियां हैं। आज का छात्र 10 वर्ष पूर्व के छात्र से अपनी उत्सुकताओं, अध्ययन व आवश्यकताओं में बिलकुल भिन्न हैं इसका संज्ञान लेते हुए **नेशलन कैरीकुलम 2005** ;छब्थ्2005द्ध ने एन0सी0टी0ई0 संचरनात्मक आव्यूहों के कक्षा में प्रयोग पर बल दिया, जिसेस अर्थपूर्ण अधिगम हो सके। प्रभावी अधिगम तब होगा, जब कक्षा में बच्चों को वो वातावरण मिलेगा, जिससे अधिगम प्रक्रिया में उनकी सहभागिता हो। स्व–अर्जित अनुभव अधिक अर्थपूर्ण एवं स्थायी होते हैं। इसलिए शिक्षा में बड़ा सशक्त परिवर्तन आया। शिक्षाशास्त्रियों के मतानुसार अब शिक्षा प्रक्रिया अध्यापक केन्द्रित न होकर छात्र केन्द्रित हो तथा अनुदेशन केन्द्रित न होकर पाठयक्रम केन्द्रित हो, तदानुसार ही शिक्षण प्रविधियों व विधियों में परिवर्तन आज सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो गये हैं।

यद्यपि परम्परागत शिक्षण विधियों का प्रयोग प्राचीनकाल से ही होता आ रहा है, फिर भी इन शिक्षण विधियों के लिए प्रायोगिक रूप से सत्यापित सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि नहीं है। सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि के अभाव में ये विधियां अक्सर अप्रभावशाली सिद्ध होती रही है। वर्तमान काल में शोधकर्ताओं ने कुछ सिद्धान्तों का

प्रतिपादन किया है जिनको दिशा निर्देशक के रूप में ग्रहण करके कुछ शिक्षण विधियों का विकास किया गया है। सामान्यतः इन्हीं शिक्षण विधियों को शिक्षण प्रतिमान के नाम से जाना जाता है।

शिक्षण प्रतिमान एक ऐसी योजना पद्धति है, जिसको पाठ्यक्रम निर्माण अनुदेशन सामग्री निर्मित करने एवं कक्षा तथा अन्य वातावरण में अनुदेशन को निर्देशित करने के लिए प्रयोग में लाई जाती है।''

भूमिका निर्वाह प्रतिमान एक ऐसा प्रतिमान है जिसे हम अपने दैनिक जीवन में घटित होने वाले वाले घटनाओं में सामना करते है। **शेफ्टल एवं शेफ्टल (1967)** ने भूमिका निर्वाह प्रतिमान का प्रतिपादन किया और इस शिक्षण प्रतिमान को चार श्रेणियों में से सामाजिक अन्तर्क्रिया परिवार के अन्तर्गत रखा है।

शिक्षा में भूमिका निर्वाह प्रतिमान की उपयोगिता इसलिए भी बढ़ जाती है कि यह रटन्त प्रणाली को कम करके समझ को विकसित करता है, जिससे हिन्दी की जटिल विषयवस्तु को बालक लम्बे समय तक याद रख पाता है एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि में भी प्रभावी होता है।

आगमन चिंतन प्रतिमान को एक ऐसे विशिष्टीकृत तर्क के रूप में समझाा जा सकता है जिसका व्यक्तिगत प्रकरणों, उदाहणों अथवा सम्बन्धों का उपयोग करके किसी सामान्य नियम या सिद्धान्त की खोज करना होता हैं आगमन चिंतन प्रतिमान में कई वाक्यों को एक शब्द के रूप में प्रयोग करना ही आगमन चिंतन प्रतिमान कहलाता है।

आगमन चिंतन प्रतिमान तार्किक अभिक्षमता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तार्किक चिन्तन के द्वारा ही व्यक्ति अपने उद्देश्यों की प्राप्ति मितव्ययी, प्रभावी तथा सहज ढंग से करने में समर्थ होता है। यही कारण है कि शिक्षा प्रक्रिया में तर्क को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। अध्यापक से यह अपेक्षा की जाती है कि वे बालकों की तर्क शक्ति का अधिकाधिक विकास करने का प्रयास करें। विचार–विमर्श, वाद–विवाद, खोज, प्रयोग, अनुसंधान आदि क्रिया–कलापों में भाग लेने के अधिक से अधिक अवसर दिए जाने चाहिए। बालकों को आगमन चिंतन प्रतिमान उनके शैक्षिक उपलब्धि में भी सार्थक प्रभाव डालता है।

अध्ययन की आवश्यकता एंव महत्व

शिक्षा का उद्देश्य समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। समाज अपनी संस्कृति एवं मूल्यों को शिक्षण द्वारा संचित करता है। शिक्षण में उन विधियों को प्रमुखता देनी चाहिए जो व्यक्ति व समाज के मूल्यों की दृष्टि से लाभदायक हो और जो विद्यार्थियों के अनुभवों को और समृद्ध कर सकें । शिक्षा एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया मानी जाती है जो समाज तथा राष्ट्र की समस्याओं के समाधान में महत्वपूर्ण योगदान देती रहीं है। किसी राष्ट्र की साक्षरता दर में वृद्धि होने से प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती हैं इस प्रकार सामाजिक परिवर्तनो के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण यंत्र माना जाता है। शिक्षा के द्वारा समाज में शांतिपूर्वक अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सकता है।

शिक्षण सम्प्रेषण की कला है जिसका प्रयोग शिक्षक विविध प्रकार की विधियों से करता है और उसका यह प्रयास रहता है कि बालक के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन आ सकें। वर्तमान नूतन शिक्षण में

सम्प्रेषण की तकनीकियों के प्रयोग एवं विषयवस्तु के क्रमिक प्रस्तुतिकरण पर अधिक ध्यान दिया जाता है। जिसमें छात्रों को सक्रिय रखते हुए शीघ्र अधिगम की अपेक्षा की जाती है। यदि शिक्षण प्रतिमानों के शिक्षण में छात्रों को उन पर आधारित अनुदेशन सामग्री उपलब्ध कराई जायें तो उनके शिक्षण से शिक्षण अधिगम विधियों को प्रभावशाली बनाया जा सकें।

वर्तमान परिस्थितियों में माध्यमिक स्तर पर हिन्दी विषय को परम्परागत शिक्षण विधि से पढ़ाया जा रहा है। जबकि ऐसा प्रतीत होता है के यदि हिन्दी को नूतन विधियों के द्वारा पढ़ाया जाय तो शिक्षण, अधिगम को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

समस्या का कथन

''माध्यमिक स्तर पर हिन्दी विषय के विद्यार्थियों में भूमिका निर्वाह प्रतिमान एवं आगमन चिन्तन शिक्षण प्रतिमान के द्वारा शिक्षण से उनके शैक्षिक उपलब्धि, पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''
समस्या में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या–

माध्यमिक स्तर–
माध्यमिक शिक्षा का वह काल है जो मुख्य रूप से 12 से 17 वर्ष की आयु के बालकों के लिए होता है।

कार्यात्मक परिभाषा
''माध्यमिक स्तर शिक्षा की ऐसी कड़ी है जो प्राथमिक शिक्षा को उच्च शिक्षा से जोड़ती है।''
प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के अन्तर्गत कक्षा 9 एवं 10 के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा।

भूमिका निर्वाह प्रतिमान–
ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार, सामाजिक भूमिका की पूर्ति के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करना ही भूमिका निर्वाह कहलाता है।

केबराल(1987) के अनुसार, भूमिका निर्वाह से प्राप्त नई अन्तर्दृष्टि एवं दृष्टिकोण अन्य परिस्थितियों में स्थानान्तरित किये जा सकते हैं। भूमिका निर्वाह व्यक्तियों को यह राह बताता है कि ''वे यह सीखे कि वे कौन हैं, वे किसमें विश्वास रखते हैं। और वे किसकों महत्व देते हैं।''

कार्यात्मक परिभाषा
किसी दूसरे व्यक्ति के सन्दर्भ में उनके अनुभव ओैर भावनात्मक रूप से उनके विचारों एवं भावनाओं को स्वयं में समानुभूति का अनुभव करते हुए स्वयं को उस परिस्थिति में रखकर देखना।

आगमन चिन्तन प्रतिमान–

आगमन चिन्तन प्रतिमान एक विशेष व्यूह रचना है। जिसके द्वारा हिन्दी विषय के विद्यार्थियों के अन्दर मानसिक चिन्तन एवं शैक्षिक चिन्तन का विकास कराया जा सकता है।

कार्यात्मक परिभाषा–

आगमन चिन्तन प्रतिमान एक विशेष व्यूह रचना है जिसके द्वारा हिन्दी विषय के विद्यार्थियों के अन्दर शैक्षिक उपलब्धि, का विकास कराया जा सकता है।

शैक्षिक उपलब्धि–

कनिंघम के अनुसार, ''शैक्षिक उपलब्धि वह है जिसके द्वारा विद्यालय में अन्दर तथा बाहर प्राप्त ज्ञान को परीक्षण के समय तथा प्रकृति के अनुसार देखा जा सकता है।''

कार्यात्मक परिभाषा–

उपलब्धि परीक्षण वह अभिकल्प है जो विद्यार्थियों के द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान, कुशलता, क्षमता का मापन करती है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण–

नैयर (2008) ने माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैरसरकारी व़िद्यालय के छात्र–छात्राओं में संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। परिणाम में पाया कि सरकारी विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक, सामाजिक एंव शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य नगण्य अन्तर पाया गया। गैर सरकारी विद्यालयों के छात्राओं में संवेगात्मक सामाजिक एवं शैक्षिक क्षमता छात्रों की तुलना में अधिक पाई गई।

मंगला और सत्यप्रकाश (2009) ने घरेलू वातावरण में विद्यार्थियों के समायोजन पर अध्ययन किया। शासकीय तथा अशासकीय गैर अनुदानित विद्यालय में पढ़ने वाले कक्षा नवीं के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया।

मरजाना (2010) ने भूमिका निर्वाह का शैक्षणिक उपलब्धि एवं सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन किया। शोध अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि–भूमिका निर्वाह से विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षणिक उपलब्धि सार्थक रूप से बढ़ी है।

विन्टर्स (2010) ने भूमिका निर्वाह के प्रभाव का विज्ञान उपलब्धि पर अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया कि–विद्यार्थियों के स्थायित्व में उपलब्धि प्राप्त की गयी।

गंगाधरराव (2012) ने माध्यमिक विद्यालय शिक्षण के संदर्भ में भूमिका निर्वाह प्रतिमान की प्रभावित : एक अध्ययन विषय पर शोध कार्य किया। निष्कर्ष में पाया कि– परम्परागत विधि से किया गया शिक्षण कार्य प्रभावी नहीं पाया गया जबकि भूमिका निर्वाह प्रतिमान की सहायता से शिक्षण करने पर विद्यार्थियों की उपलब्धि बहुत अधिक प्रभावी पायी गई तथा भूमिका निर्वाह प्रतिमान की सहायता से शिक्षण कार्य करने पर विद्यार्थियों की सामाजिक समस्याओं को पहचानते हैं, समाज में विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन करते हैं, एवं समस्याओं को अलोकित करते हैं। भूमिका निर्वाह प्रतिमान की सहायता से अर्जित ज्ञान लम्बे समय तक बना रहता है।

पाटिल (2012) ने भूमिका निर्वाह प्रतिमान की प्रभाविता का अध्ययन किया। निष्कर्ष के रूप में पाया कि– विद्यार्थियों की उपलब्धि को बढ़ाने में भूमिका निर्वाह सार्थक रूप से प्रभावी होता है।

पचपाण्डे (2012) ने ''कण्डक्टिव ए स्टडी टू चेक द इफेक्ट ऑफ एडवांस आर्गेनाइजर मॉडल ऑन अचीवमेन्ट ऑफ स्टूडेन्ट्स इन मैथमेटिक्स टीचिंग एट स्कूल लेवल'' विषय पर कक्षा आठवीं के मराठी माध्यम के गणित विषय के 74 छात्रों पर अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि अग्रिम व्यवस्थापक प्रतिमान से दिये शिक्षण में परम्परागत शिक्षण विधि से अधिक उपलब्धि हासिल होती है। अतः अग्रिम व्यवस्थापक प्रतिमान, परम्परागत शिक्षण विधि से अधिक प्रभावशाली होता है।

नामदेव एवं रेखा (2012) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में परिवार के वातावरण का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया कि शासकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का शैक्षणिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया जाता है।

मीणा (2012) ने पारिवारिक वातावरण के परिप्रेक्ष्य में सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थयों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का अध्ययन किया। अध्ययन के परिणाम में पाया कि– सामान्य वर्ग व आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं आयेगा।

मोहन्ती, वी0के0 व मोहन्ती, सुष्मिता (जून 2012) ने ''इफेक्टिवनेस ऑफ कॉन्सेप्ट अटेनमेन्ट मॉडल एण्ड एडवान्स आर्गेनाइजर मॉडल इन द डेवलपमेन्ट ऑफ कान्सेप्ट ऑफ स्टूडेन्ट इन सांइस'' पर अध्ययन किया। निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि– प्रत्यय निष्पत्ति प्रतिमान शिक्षण विधि की सहायता से दिये गये शिक्षण से प्राथमिक स्तर के छात्रों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास अधिक प्रभावशाली तरीके से हुआ। अग्रिम व्यवस्थापक प्रतिमान की सहायता से दिया गया शिक्षण छात्रों के वैज्ञानिक तर्क शक्ति के विकास में प्रभावशाली होता है। प्रत्यय निष्पत्ति प्रतिमान शिक्षण विधि से दिया गया शिक्षण अग्रिम व्यवस्थापक प्रतिमान विधि से दिये गये शिक्षण से अधिक प्रभावशाली होता है।

राव, एन. पापा (2013) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के जन्मक्रम का उनके संवेगात्मक बुद्धि तथा समस्या समाधान योग्यता का सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

चावला, जया व सिंह, गुरमीत (2014) ने ''इफेक्ट ऑफ टीचिंग थ्रु कॉनसेप्ट मैपिंग ऑन अचीवमेन्ट इन केमेस्ट्री ऑफ नाइन ग्रेडर्स'' विषय पर पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ में अध्ययन किया। निष्कर्ष के रूप में पाया कि प्रत्यय प्रतिचित्रण की सहायता से दिया गया शिक्षण, परम्परागत शिक्षण विधि की तुलना में अधिक प्रभावशाली होता है।

भावसार, प्रशान्त (2014) ने कक्षा 9वीं पर गणित विषय हेतु प्रयोग विधि एवं व्याख्यान विधि की सापेक्ष प्रभाविता का विद्यार्थियों की गणित में उपलब्धि, आगमन व निगमन तर्क क्षमता, गणितीय रुचि तथा प्रयोगविधि के प्रति प्रतिक्रियाओं के सन्दर्भ में अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया कि–प्रयोग विधि समूह और व्याख्यान विधि समूह में आगमन तर्क क्षमता के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जबकि पूर्व आगमन तर्क क्षमता तथा बुद्धि को सहचर लिया गया है।

स्वामी, शिल्पी (2015) ने उच्च प्राथमिक स्तर पर डे–बोर्डिंग व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों में शैक्षणिक उपलब्धि एवं अध्ययन आदतें– एक विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। परिणाम में पाया कि – डे–बोर्डिंग उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षणिक उपलब्धि सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पायी गयी।

पाटीदार, महेन्द्र (2014) ने भूमिका निर्वाह प्रतिमान की प्रभाविता का कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों की उपलब्धि, समानुभूति, वैयक्तिक मूल्य एवं प्रतिक्रिया के सन्दर्भ में अध्ययन किया। निष्कर्ष के रूप में पाया कि–भूमिका निर्वाह प्रतिमान उपलब्धि, समानुभूति के विकास एवं वैयक्तिक मूल्य के आयामों के विकास में सार्थक रूप से प्रभावी पाया गया तथा भूमिका निर्वाह प्रतिमान द्वारा दिया गया उपचार विद्यार्थियों के वचनबद्धता, चुनौती, समस्या–समाधान, समूह कार्य, अनुशासन, कठिन कार्य, ईमानदारी, समयबद्धता, आत्मनिर्भरता एवं सहयोग वैयक्तिक मूल्य के सन्दर्भ में सार्थक रूप से प्रभावी पाया गया।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य

1. भूमिका निर्वाह शिक्षण प्रतिमान के शिक्षण द्वारा माध्यमिक स्तर पर हिन्दी विषय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. आगमन चिन्तन शिक्षण प्रतिमान के शिक्षण द्वारा माध्यमिक स्तर पर हिन्दी विषय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. भूमिका निर्वाह शिक्षण प्रतिमान एवम् आगमन चिन्तन शिक्षण प्रतिमान के शिक्षण द्वारा माध्यमिक स्तर पर हिन्दी विषय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पना निम्नलिखित होगी

1. भूमिका निर्वाह शिक्षण प्रतिमान के शिक्षण द्वारा माध्यमिक स्तर पर हिन्दी विषय के विद्यार्थियों के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के शैक्षिक उपलब्धि के अंकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं आयेगा।

2. आगमन चिन्तन शिक्षण प्रतिमान के शिक्षण द्वारा माध्यमिक स्तर पर हिन्दी विषय के विद्यार्थियों के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं आयेगा।
3. भूमिका निर्वाह शिक्षण प्रतिमान एवम् आगमन चिन्तन शिक्षण प्रतिमान के शिक्षण द्वारा माध्यमिक स्तर पर हिन्दी विषय के विद्यार्थियों में उत्तर परीक्षण के द्वारा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं आयेगा।

समस्या का सीमांकन साक्षरता दर

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन पौड़ी जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर प्रशासित किया जायेगा।
2. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु हिन्दी विषय में भूमिका निर्वाह प्रतिमान एवं आगमन चिन्तन प्रतिमान विधि का प्रयोग किया जायेगा।
3. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शैक्षिक उपलब्धि, को लिया जायेगा।
4. अलग–अलग व्यूह रचनाओं के आधार पर लगभग 3 माह तक अलग–अलग स्कूल में हिन्दी विषय का एक नियंत्रित वातावरण में शिक्षण कार्य किया जायेगा।

शोध विधि–प्रस्तुत शोध अध्ययन में अनुसंधान विधि के लिए वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा।
जनसंख्या–प्रस्तुत शोध अध्ययन में पौड़ी जिले में स्थित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या माना जायेगा।

न्यादर्श–प्रस्तुत शोध अध्ययन में संभावित प्रतिचयन यदृच्छिक विधि द्वारा माध्यमिक स्तर के 10 विद्यालयों का चयन किया जायेगा जिसमें अध्ययनरत् 70 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया जायेगा तत्पश्चात् 5 माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को भूमिका निर्वाह प्रतिमान एवं 5 माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को आगमन चिन्तन प्रतिमान द्वारा प्रयोगात्मक विधि से पढ़ाया जायेगा।

प्रयुक्त उपकरण – प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा–
शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण – शोधार्थी द्वारा स्वयं निर्मित किया जायेगा।

प्रदत्तों के संकलन की विधि– न्यादर्श चयन के पश्चात् विद्यार्थियों को दो अलग–अलग समूहों में विभाजित किया जायेगा। तत्पश्चात् सामान्य अवधि में एक ही अध्यापक/शोधार्थी द्वारा दोनों समूहों (प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह) का अलग–अलग व्यूह रचनाओं के विषय में सामान्य जानकारी दी जायेगी। सामान्य जानकारी के बाद दोनों समूहों को 30 अलग–अलग व्यूह रचनाओं के आधार पर उपचार दिया जायेगा। उपचार देने के पहले पूर्व परीक्षण व उपचार के समाप्ति के बाद पश्च परीक्षण लिया जायेगा। शोध कार्य हेतु प्रदत्तों का संकलन उपरोक्त उपकरणों द्वारा किया जायेगा।

सांख्यिकी विधि– प्रस्तुत शोध में आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण, एवं अन्य सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन की सार्थकता– नये प्रतिमान द्वारा शिक्षण कार्य न कराया जाना एवं परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा ही पढ़ाये जाने के कारण वर्तमान समय में हिन्दी विषय में विद्यार्थियों की रुचि का कम होना एवं भूमिका निर्वाह प्रतिमान एवं आगमन चिन्तन शिक्षण प्रतिमान द्वारा हिन्दी विषय पर प्रभाव देकर विद्यार्थियों को दोनों में ज्यादा प्रभावकारी प्रतिमान द्वारा हिन्दी विषय का अध्यापन कार्य कराया जाना एवं उनमें हिन्दी के प्रति रुचि में वृद्धि किया जा सकता है।

निष्कर्ष– अद्यतन परिवेश में हो रहे विभिन्न प्रकार के सामाजिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण शिक्षा के ज्ञानात्मक क्षेत्र में भी परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं। शिक्षा का लक्ष्य व्यवहार परिवर्तन है और यह परिवर्तन शिक्षार्थी के ज्ञान में, कौशल में, दृष्टिकोण में होता है, जिससे वो अपने चारों ओर के वातावरण के साथ अनुकूलन कर सकें। आज का समय बहुत चुनौती भरा है। हर पल नए ज्ञान का सृर्जन हो रहा है। इस नए ज्ञान का पाठ्यक्रम में समावेशित करना भी आवश्यक होता है। आज ज्ञान का वैश्वीकरण हो रहा है, जिसके कारण स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना का विकास भी शिक्षा का उद्देश्य है। पूर्व में पाठ्यक्रम को ग्राही बनाने के लिए जिन प्रविधियों आदि का प्रयोग किया जाता रहा, वे आज निष्प्रभावी हो गयी हैं, वर्तमान में शिक्षण व अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए नई–नई प्रविधियों व तकनीकियों का प्रयोग किया जाना आवश्यक है। शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के द्वारा ही कक्षा में उन अधिगम परिस्थितियों का निर्माण किया जाता है, जिसमें बच्चे को अधिगम अनुभवों को अर्जित करने में कठिनाई नहीं होती है।

शोध अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि डावनिंग (1994) ने भूमिका निर्वाह से भावनाओं, व्यवहारों, कौशलों, मूल्यों एवं रणनीतियों की सहायता से समस्या सुलझाने में भूमिका निर्वाह सफल रहा है। इसके अतिरिक्त यह विद्यार्थियों को शक्तिशाली अधिगम की रणनीति बनाने में भी मदद करता है। तिवारी (1994) ने निष्कर्ष में पाया कि– भूमिका निर्वाह प्रतिमान उपलब्धि को विकसित करने में प्रभावी पाया गया। चाप (2005) ने निष्कर्ष में पाया कि– परम्परागत व्याख्यान विधि से अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की तुलना में भूमिका निर्वाह से अध्ययन करने वाले विद्यार्थी सक्रिय अधिगम को अधिक प्रोत्साहित करते हैं। फेंग एवं युन (2007) ने निष्कर्ष में पाया कि भूमिका निर्वाह विधि विद्यार्थियों में रुचि विकसित करती है एवं इससे उपलब्धि भी बढ़ती है। डायना (2009) ने निष्कर्ष में पाया कि जिस समूह को भूमिका निर्वाह की सहायता से पढ़ाया गया था उसकी उपलब्धि व्याख्यान विधि की तुलना में अधिक थी। स्टूरगेस (2009) ने निष्कर्ष में पाया कि– भूमिका निर्वाह, परम्परागत विधि की तुलना में विद्यार्थियों की उपलब्धि के सन्दर्भ में सार्थक रूप से प्रभावी पाया गया। फिलीप्सन (2009) के अध्ययन के निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि– भूमिका निर्वाह का उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया। रियरा एवं अन्य (2010) ने निष्कर्ष में पाया कि– भूमिका निर्वाह के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति सकारात्मक पाई गई एवं भूमिका निर्वाह के बाद उनकी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभावी पायी गयी। घाजेरियन (2010) ने अध्ययन में पाया कि भूमिका निर्वाह का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

मरजाना (2010) ने निष्कर्ष में पाया कि– भूमिका निर्वाह से विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षणिक उपलब्धि सार्थक रूप से बढ़ी है। विन्टर्स (2010) ने निष्कर्ष में पाया कि– विद्यार्थियों में स्थायित्व उपलब्धि प्राप्त की गयी। गंगाधरराव (2012) ने निष्कर्ष में पाया कि भूमिका निर्वाह प्रतिमान की सहायता से अर्जित ज्ञान लम्बे समय तक बना रहता है। पाटिल (2012) ने निष्कर्ष के रूप में पाया कि–विद्यार्थियों की उपलब्धि को बढ़ाने में भूमिका निर्वाह सार्थक रूप से प्रभावी होता है। पाटीदार, महेन्द्र (2014) ने निष्कर्ष के रूप में पाया कि– भूमिका निर्वाह प्रतिमान द्वारा दिया गया उपचार विद्यार्थियों के वचनबद्धता, चुनौती, समस्या–समाधान, समूह कार्य, अनुशासन, कठिन कार्य, ईमानदारी, समयबद्धता, आत्मनिर्भरता एवं सहयोग वैयक्तिक मूल्य के सन्दर्भ में सार्थक रूप से प्रभावी पाया गया।

अतः हिन्दी शिक्षण में भूमिका निर्वाह प्रतिमान एवं आगमन चिन्तन प्रतिमान का शैक्षिक उपलब्धि, पर सार्थक प्रभाव देखा गया। अतः शोधार्थी द्वारा इस विषय पर शोध कार्य दोनों प्रतिमानों में अधिक प्रभावकारी प्रतिमान की खोज की जायेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मोहन्ती, बी0के0 एवं मोहन्ती, सुष्मिता (2012), इफेक्टिवनेस ऑफ कान्सेप्ट अटेनमेन्ट मॉडल एण्ड एडवान्स आर्गेनाइजर मॉडल इन द डेवलपमेन्ट ऑफ कान्सेप्ट ऑफ स्टूडेण्ट्स इन साइंस।
2. चावला, जया व सिंह, गुरमीत (2014), एक्सीलेंस इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड रिसर्च (मल्टी सब्जेक्ट जर्नल), आई0ए0एस0एन0 नं 23322–0147, वाल्यूम 3, ईश्यू–3।
3. सेनसनवाल एण्ड सिंह (1991), शिक्षण प्रतिमान, बड़ौदा : सोसायटी फॉर एजूकेशन रिसर्च एण्ड डेवलपमेन्ट।
4. शर्मा, आर0ए0 (1987), शिक्षा तकनिकी, मेरठ : लायल बुक डिपो।
5. शर्मा, संदीप (2007), शैक्षिक तकनिकि एवं कक्षा–कक्ष प्रबन्धन'', जयपुर : शिक्षा प्रकाशन।
6. भावसार, प्रशान्त (2014) कक्षा 9वीं पर गणित विषय हेतु प्रयोग विधि एवं व्याख्यान विधि की सापेक्ष प्रभाविता का विद्यार्थियों की गणित में उपलब्धि, आगमन व निगमन तर्क क्षमता, गणितीय रुचि तथा प्रयोगविधि के प्रति प्रतिक्रियाओं के सन्दर्भ में अध्ययन, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म0प्र0)।
7. अन्नपूर्णा (2006) साइटेड इन भावसार, प्रशान्त (2014) कक्षा 9वीं पर गणित विषय हेतु प्रयोग विधि एवं व्याख्यान विधि की सापेक्ष प्रभाविता का विद्यार्थियों की गणित में उपलब्धि, आगमन व निगमन तर्क क्षमता, गणितीय रुचि तथा प्रयोगविधि के प्रति प्रतिक्रियाओं के सन्दर्भ में अध्ययन, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म0प्र0)।
8. मार्शल, पी. ड्यूसी (2004) इफेक्ट ऑफ नॉन वर्बल लैंगवेज कम्यूनिकेशन ऑन सोशल साइंस ऑफ हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स, पी–एच.डी. (क्लीनिकल साइकोलॉजी), इण्डियाना यूनिवर्सिटी (यू.एस.)।
9. मुहम्मद, दीन (2001) केन्द्रीय विद्यालयों में अध्ययनरत् इण्टरमीडिएट (10+2) छात्र–छात्राओं द्वारा संकाय चयन में शैक्षिक रुचि, बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक उपलब्धि की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

10. राव, एन. पापा (2013) उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के जन्मक्रम का उनके संवेगात्मक बुद्धि एवं समस्या समाधान योग्यता पर प्रभाव का अध्ययन, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, पं0 रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ0ग0)।
11. दहिया, इन्दु (2008) ने उच्चारण तथा वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के उपचारीकरण में अध्येता केन्द्रित तथा कार्यकलाप–आधारित अधिगम–अध्यापन उपागम की प्रभावशीलता का प्रायोगिक अध्ययन, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक।
12. श्रीवास्तव, अनिता (2013) उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आत्मसिद्धि, मूल्य और समायोजन पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, पं0 रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ0ग0)।
13. नैयर (2008) माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैरसरकारी विद्यालय के छात्र–छात्राओं में संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन का विश्लेषणात्मक अध्ययन, शोध प्रकल्प, 43(2), पृ0 31–33
14. मीणा (2012) पारिवारिक वातावरण के परिप्रेक्ष्य में सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का अध्ययन, मार्डन एजुकेशनल रिसर्च इन इण्डिया, 18(3), पृ0 54–57